राजा राममोहन राय और पत्रकारिता

मंजू कुमारी
रिसर्च स्कॉलर, सिंघानिया युनिवर्सिटी,
राजस्थान।

राजा राममोहन राय भारतीय राष्ट्रीय प्रैस के संस्थापक थे। वो प्रैस की स्वतंत्रता के समर्थक थे। मानव की उन्नति से ज्ञान का प्रकाश कर अंधकार को मिटाना चाहते थे। इसका माध्यम उनको समाचार पत्र ही लगे। इन्हीं विचारों से प्रेरित होकर निश्चय किया की समाचार पत्रो द्वारा लोगो में शिक्षा, ज्ञान और अंग्रेजी सरकार के विरूद्ध जनमत तैयार किया जा सकता है। जनता में भ्रातत्व, सम्मानता तथा स्वाधीनता की भावना पैदा की जा सकती है। समाचार पत्र नागरिकों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का महत्वपूर्ण भाग है। निष्पक्ष सूचना का अधिकार प्रत्येक नागरिक को है। आधुनिक भारत के निर्माण और विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा। राजा राममोहन राय द्वारा निकाला गया 'संवाद कौमुदी' 1821 में प्रकाशित हुआ। किसी भी भारतीय द्वारा पहला समाचार पत्र स्वप्रथम जेम्स आगस्टक हिक्की द्वारा बंगाल में 1780 ई. में पहला समाचार पत्र 'बंगाल गजट' के नाम से प्रकाशित किया गया। यह समाचार पत्र साप्ताहिक था। सरकार की आपत्ति के कारण कुछ समय पश्चात इसका प्रकाशन बन्द हो गया। किसी भी भारतीय भाषा में सबसे पुराना समाचार पत्र 'समाचार दर्पण' था जो मार्समैन और कैरे द्वारा प्रकाशित किया जाता था। कुछ समय पश्चात समाचार पत्रो के लिए कुछ नियम बनाये गये। प्रकाशन से पूर्व इनका निरक्षण करवाना आवश्यक था। प्रकाशकों से शपथ पत्र जमा करवाया जाता था। 1800 ई.वी. के प्रैस अधिनियम द्वारा समाचार पत्रों को सरकार के पास प्रतिभूति जमा करवानी होती थी।

लार्ड हिस्टिगंस का दृष्टिकोण समाचार पत्रो के प्रति उदार था। उसी के शासनकाल में बंगला भाषा में बंगाल का पहला समाचार पत्र 'बंगाल गजट' का प्रकाशन आरंभ हुआ। राजा राममोहन राय की आत्मीय सभा के कुछ सदस्यों द्वारा आरंभ किया गया था। मिशनरियों ने 'समाचार दर्पण' का साप्ताहिक प्रकाशन किया। अंग्रेजी का उदारवादी पत्र ''कलकत्ता जर्नल'' का आरंभ हुआ।

ताराचन्द और भवानीचन्द बन्धोपाध्याय ने 'संवाद कौमुदी' बंगाली पत्रिका का प्रकाशन आरंभ किया। बाद में राजा राममोहन राय ने इसका चार्ज संभाला। उनका पत्र 'संवाद कौमुदी' बंगला और अंग्रेजी भाषा में निकाला गया। फारसी भाषा में 'मिरात–उल–अखबार' प्रकाशित हुआ।

राजा राममोहन राय समाचार पत्रों के निर्भिक, निष्पक्षता के पक्ष में थे। इनको अंग्रेजी असंतोष का सामना करना पड़ा। वे एक प्रतिभाशाली विचारक तथा प्रसिद्ध समाज सुधारक थे

जिसके लिए उसको एक उदार प्रैस की आवश्यकता थी। डिग्बी के सम्पर्क में आने से अंग्रेजी के समाचार पत्र पढ़ने की आदत हुई। समाचार पत्रो की स्वतंत्रता में सरकार का दृष्टिकोण कठोर होने लगा। राजा राममोहन राय के समाचार पत्र 'मिरात–उल–अखबार' की कठोर आलोचना की गई। 1827 ई.सवी में सरकार ने एक आदेश जारी कर समाचार पत्रो की स्वतंत्रता पर प्रतिबन्ध लगा दिया। समाचार पत्रो के लिए लाईसेंस अनिवार्य कर दिया गया जिससे विधि का प्रकाशन करने पर या लाईसेंस का पालन न करने पर रद्द कर दिया जायेगा।

राजा राममोहन राय और उसके समर्थको ने सरकार के सामने ज्ञापन प्रस्तुत किया। उनका ज्ञापन अस्वीकार कर दिया गया। उन्होंने अपने पत्रकार जीवन का अन्त नहीं किया। उन्होंने बंगदूत नाम का एक समाचार पत्र निकाला जो बंगाली, हिन्दी और फारसी में निकलता था। समाचार पत्रो में सबसे अधिक योगदान राजा राममोहन राय और द्वारका नाथ टैगोर का था। वे समाचार पत्रों और अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम से भारतीय समाज में प्रचलित बुराईयों को दूर करना चाहते थे। उन्हें नवयुवक का अग्रदूत माना जाता है जिसे अनेको रूढ़िवादी भारतीयों ने उसका विरोध भी किया। अतः हम कह सकते है कि राजा राममोहन राय का पत्रकारिता के क्षेत्र में काफी महत्वपूर्ण योगदान रहा। उनको पुर्नजागरा तथा धर्मसुधार आन्दालनो का अग्रदूत भी माना जाता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आर.सी. मजूमदार एण्ड अदर्स, ब्रिटिश पेरामाऊटसी एण्ड रेनासा।
2. डा. एस.एस. नन्दा, इण्डियन पालिटिकल थाटस।
3. मोहित कुमार हलदर, अनुवादक कर्ण सिंह चौहान, भारतीय नवजागरण और पुनर्वादी चेतना।
4. डा. विश्वनाथ प्रसाद वर्मा, भारतीय राजनीतिक चिन्तन।
5. प्रताप सिंह आधुनिक भारत का सामाजिक तथा आर्थिक इतिहास।
6. इकबाल सिंह, राजा राममोहन रायः ए बायोग्राफी इंक्वारी इन टू दी मेकिंग ऑफ मार्डन इण्डिया
7. सत्यकेतु विद्यालेकार, भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास।